Course : -

Paper : - VI

Topic : - Freudian Psychology.
(Psychoanalysis)

Prepared by :- Prof (Dr.) Kamal Varma, Co-ordinator. U.G. Psychology. N.O.U.

सिग्मंड फ्रायड (1856 - 1938) इन्होंने मनोविज्ञान के क्षेत्र में निम्नलिखित योगदान दिए। मनोविश्लेषण के सिद्धान्त एक आधारभूत सिद्धांत है।

फ्रायड ने मानसिक जीवन का वर्णन करते हुए चेतना (consciousness) और तंत्रिका तंत्र (Nervous system) को प्रमुख स्थान दिया। मानसिक संरचना को (Mental structure) को दो भागों में बाँटा है

- i) Topographical aspect
- ii) dynamic aspect

i) Topographical aspect (आकारात्मक पहलू)

- Id — इदम्
- Ego — अहं
- super Ego — पराअहं

ii) Dynamic aspect (गत्यात्मक पहलू)

- conscious — चेतन
- Pre-conscious — अव:चेतन
- unconscious — अचेतन

Scanned with CamScanner

इड़ का सम्बन्ध व्यक्ति के प्रारम्भ में जन्म से दो वर्षों (0 - 2 years) तक होता है, इसका सम्बन्ध अचेतन मस्तिष्क से होता है, यह सुख की कामना करता है। (Based upon pleasure Principle)

फ्रायड ने एक नए प्रत्यय (concept) का Libido (लिबिडो) को जन्म दिया। इसका सम्बन्ध व्यक्ति के कामुकता (Sex) से होता है, बाद में फ्रायड ने Libido को एक energy (उर्जा प्रवाह) के रूप में बताया, जिसमें कामुकता भी एक प्रवाह है।

लिबिडो का प्रवाह दो दिशाओं में होता है - अन्दर की ओर एवं बाहर की ओर। जब इसका प्रवाह अन्दर की ओर होता है तो इसे स्व-काम (Narcissism) और जब बाहर की ओर होता है तो इसे सामाजीकरण (socialization) कहते हैं।

फ्रायड ने वृत्तियों (Instincts) का भी उल्लेख किया है → Life instincts (जीवन वृत्ति)
→ death instinct (मृत्यु वृत्ति)

इसमें जीवन वृत्ति रचनात्मक होती है तथा मृत्युवृत्ति विध्वंसात्मक होती है।

फ्रायड ने अचेतन (unconscious) मस्तिष्क पर बड़ा बल दिया है, क्योंकि वहाँ

वहाँ भी कई प्रकार की महत्वपूर्ण मानसिक प्रक्रियाएँ होती है, (जैसे - व्यक्ति का नाम भूलना, स्वप्न (dreams) अचेतन मन की इच्छाएँ, ऐसा की वजह से चेतन में नही आ पाते है क्यों कि सामाजिक रूप से वे अवांछनीय (forbidden) होते हैं।

फ्रायड ने हीनभावना (feeling of Inferiority) का उल्लेख किया है जब हीनभावना अत्यधिक बढ़ जाती है तो वह ग्रंथि (complex) में परिवर्तित हो जाती है।

मनोविश्लेषण सिद्धान्त में व्यक्तित्व के विकास (Personality development) का उल्लेख किया है। व्यक्तित्व विकास की तीन अवस्थाएँ होती है —

1. शैशवावस्था (Infantile)
2. अव्यक्त (Latent)
3. किशोरावस्था (Adolescent)

प्रथम अवस्था पाँच से छः (5-6 yrs) तक होता है। इसकी संतुष्टी मुख के माध्यम होता है, (Mouth) दूसरी अवस्था में व्यक्तित्व में संतुष्टी उन बातों से होती है जो सामाजिक विकास (social Development) में सहायक होती है, तीसरी अवस्था में व्यक्तित्व में आत्म-

केन्द्रित (self centered) हो जाता है तथा उनका ध्यान विपरीत लिंगी (opposite sex) की ओर ज्यादा ज्यादा है।

इन तीन अवस्थाओं का अगर विकास समुचित नहीं होता है तो व्यक्ति में मनस्तापी (Neurotic) लक्षण देखे जा सकते हैं।

फ्रायड ने मनोविज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान दिए हैं, लेकिन फ्रायड को लिबिडो की आलोचना की कई परन्तु बाद में उन्होंने लिबिडो को sex के अलावा एक general energy के रूप में विकसित किया है।

Scanned with CamScanner